



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश

(असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्यशासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, सोमवार, 9 मई, 1988/19 बैशाख, 1910

हिमाचल प्रदेश सरकार

निर्वाचन विभाग

अधिसूचना

शिमला-171002, 5 मई, 1988

संख्या 7-2/74-निर्वाचन-II.—हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश पंचायती राज ऐक्ट, 1968 (1970 का 19) की धारा 187 के साथ पठित, धारा 163 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाते हैं, जिनका शीर्षक हिमाचल प्रदेश पंचायत समिति अध्यक्ष और उपाध्यक्ष (निर्वाचन) नियम, 1988 है और इनका हिमाचल प्रदेश राजपत्र में इस विभाग की अधिसूचना संख्या 7-2/74-निर्वाचन-2,

तारीख 19 मितम्बर, 1987 द्वारा प्रकाशन किया जा चुका है, अर्थात् :—

भाग—1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ.—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम, हिमाचल प्रदेश पंचायत समिति अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, निर्वाचन नियम, 1988 है।

(2) ये नियम तुरन्त प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं.—(1) इन नियमों में जब तक कि कोई बात विषय या सन्दर्भ में विरुद्ध न हो:—

(क) "ऐक्ट" से हिमाचल प्रदेश पंचायती राज ऐक्ट, 1968 अभिप्रेत है ;

(ख) "लागत" से निर्वाचन याचिका के विचारण पर उपगत या उसके अनुषंगिक समस्त लागत, प्रभार और खर्च अभिप्रेत है ;

(ग) "अभ्यर्थी" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो निर्वाचन में अभ्यर्थी के रूप में नामनिर्दिष्ट किया गया हो या ऐसा किए जान का दावा करता हो ;

(घ) "निदेशक-निर्वाचन" (स्थानीय निकाय) से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो इन नियमों के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए, राज्य सरकार द्वारा निदेशक-निर्वाचन (स्था 0 निकाय) के कृत्यों का निर्वहन करने के लिए नियोजित किया गया है ;

(ङ) "निर्वाचन" से पंचायत समिति के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के पद के भरे जाने के लिए निर्वाचन अभिप्रेत है ;

(च) "निर्वाचन अधिकार" से अभ्यर्थी के रूप में निर्वाचन लड़ने या न लड़ने या नाम वापस लेने या निर्वाचन में मत डालने या न डालने का किसी व्यक्ति का अधिकार अभिप्रेत है ;

(छ) "प्ररूप" से इन नियमों से संलग्न प्ररूप अभिप्रेत है ;

(ज) "अभिवक्ता" से सिविल न्यायालय में दूसरे की ओर से अभिवचन करने या उप-संजात होने के लिए हकदार कोई व्यक्ति अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत अधिवक्ता भी है ;

(झ) "पीठासीन अधिकारी" से इन नियमों के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए बैठक की अध्यक्षता करने के लिए उपायुक्त द्वारा प्राधिकृत कोई व्यक्ति अभिप्रेत है ;

(ञ) "विहित प्राधिकारी" से जिले का उपायुक्त अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत, इन नियमों के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए सरकार द्वारा, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियुक्त कोई व्यक्ति भी है ;

(2) अन्य सभी शब्दों और पदों के, जो इन नियमों में प्रयुक्त हैं किन्तु परिभाषित नहीं हैं, वे ही अर्थ होंगे जो अधिनियम में उनके हैं।

भाग—2

अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के निर्वाचन का संचालन

3. निर्वाचन की सूचना.—अधिनियम की धारा 63 के खण्ड (बी) के अधीन सदस्यों के सहयोजन के पश्चात् अधिनियम की धारा 68 के उपबन्धों के अनुसार समस्त प्राथमिक और सहयोजित सदस्यों के नाम शासकीय राजपत्र में अधिसूचित किए जाने के पश्चात्, उन्हें सूचना देकर, जो 72 घंटे की अवधि से कम न होगी और जिसकी तामील उनके सामान्य निवास स्थान पर कराई जाएगी, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के निर्वाचन के लिए बैठक करने के लिए, जिसकी अध्यक्षता वह स्वयं या इस निमित्त प्राधिकृत अन्य प्राधिकारी करेगा, तारीख, समय और स्थान नियत करेगा। अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन की वाकत कार्रवाई करने से पूर्व राजनिष्ठा की शपथ बैठक में उपस्थित ऐसे व्यक्तियों को भी दिलाई जाएगी जिन्होंने तत्प्रयोजन के लिए नियत पूर्वतर बैठक में ऐसी शपथ न ली हो।

4. बैठक के लिए गणपूर्ति (कोरम).—नियम 3 के अधीन नियत बैठकों में अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का निर्वाचन करने के लिए गणपूर्ति (कोरम) पंचायत समिति के प्राथमिक और सहयोजित सदस्यों की कुल संख्या का दो तिहाई होगी :

परन्तु यदि ऐसी बैठक, वांछनीय गणपूर्ति न होने के कारण स्थगित कर दी जाती है, तो अगली बैठक, सभी प्राथमिक तथा सहयोजित सदस्यों को 72 घंटे की सम्यक् सूचना दिए जाने के उपरान्त की जायेगी और ऐसी बैठक में किसी गणपूर्ति की अपेक्षा नहीं की जायेगी और अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का निर्वाचन कर दिया जाएगा।

5. अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के निर्वाचन के लिए प्रक्रिया.—अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, का निर्वाचन, पंचायत समिति के प्राथमिक एवं सहयोजित सदस्यों द्वारा, अपने में से, निम्नलिखित विहित रीति में गुप्त मतदान द्वारा किया जाएगा :—

- (i) पीठासीन अधिकारी, प्रस्ताव मंगवाने और बैठक की कार्यावाही के अभिलेख में प्रस्तावकों और समर्थकों के नाम लिखित करने के पश्चात् हिन्दी में देवनागरी लिपि में निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों की वर्णानुक्रम में एक सूची तैयार करेगा। निर्वाचन किए जाने वाले स्थान में सदस्यों की जानकारी के लिए सहज दृश्य स्थान पर, निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थी के नामों को दर्शित करने वाली एक सूची प्रदर्शित की जाएगी। मतदान, पीठासीन अधिकारी द्वारा यथा नियत तथा घोषित समय पर आरम्भ और समाप्त किया जाएगा। मतपत्र प्ररूप-2 में होंगे और निर्वाचन में, इस्पात की मतपेटियों का प्रयोग किया जायेगा ;
- (ii) मतदाता को मतपत्र जारी करने से पूर्व पीठासीन अधिकारी, मतपत्र के पीछे अपने पुरे हस्ताक्षर करेगा और मतपत्रों का पूरा लेखा रखेगा ;
- (iii) मतदाता, मतपत्र प्राप्त कर लेने पर, मतदान कक्ष में प्रवेश करेगा और वह जिस अभ्यर्थी को अपना मत देना चाहता हो, उसके नाम के सामने क्रॉस (X) चिन्ह, लगाएगा ;
- (iv) मतदाता, उक्त खण्ड (iii) में विनिर्दिष्ट रीति में मतपत्र पर चिन्ह लगाने के उपरान्त, मतपत्र को इस प्रकार से मोड़ेगा कि उसका मत दिखाई न पड़े और वह मतपत्र, मतपेटी में डालेगा ;
- (v) जिस मतदाता ने मतपत्र का ऐसी रीति में प्रयोग किया है कि ऐसा मतपत्र विधिमान्य न समझा जा सके वह इस प्रार्थना के साथ मतपत्र को पीठासीन अधिकारी को वापिस कर देगा कि उसे दूसरा मतपत्र जारी किया जाए और पीठासीन अधिकारी अपने समाधान पर, मतदाता को दूसरा मतपत्र जारी करेगा और वापस किए गए मतपत्र पर "खराब तथा रद्द" शब्द चिन्हित करेगा ;

(vi) यदि मतदाता, मतपत्र प्राप्त करने के उपरान्त, इसका प्रयोग न करने का विनिश्चय करता है तो वह उसे पीठासीन अधिकारी को वापिस कर देगा और ऐसे वापिस किए गए मतपत्र पर पीठासीन अधिकारी, शब्द "वापस-रह" अंकित करेगा ;

(vii) समस्त रह किए गए मतपत्रों को पीठासीन अधिकारी एक पृथक पैकट में रखेगा ;

यदि केवल एक ही अभ्यर्थी, पद (अध्यक्ष के पद के लिए एक तथा उपाध्यक्ष के पद के लिए एक) के लिए प्रस्तावित किया जाता है तो पीठासीन अधिकारी, ऐसे अभ्यर्थी को प्ररूप-1 में निर्वाचित घोषित कर देगा और उचित रसीद लेने पर निर्वाचित अभ्यर्थी को इस घोषणा की प्रति का प्रदाय करेगा ।

6. अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन पर मतों की गणना.—(1) अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन के मतदान के उपरान्त, पीठासीन अधिकारी, गणना के समय उपस्थित अभ्यर्थियों को, मतपेटी का निरीक्षण करने की अनुमति देगा और इस बात के समाधान पर कि वे अधिकल हैं उन्हें मोहरबन्द करेगा । और अध्यक्ष के लिए शीर्षक मतों की गणना का कार्य आरम्भ करेगा ;

(2) पीठासीन अधिकारी, मतपेटी को खोलेगा और मतपत्रों को मतपेटी से बाहर निकालेगा और अभ्यर्थी प्रति उन्हें दृष्टग रखेगा ;

(3) पीठासीन अधिकारी, मतपत्र को नामजूर कर देगा, यदि:—

(क) मत, एक से अधिक अभ्यर्थियों के पक्ष में दिया गया है ; या

(ख) यदि इस पर कोई ऐसा चिन्ह या लेख्य है जिससे मतदाता की पहचान हो सके ; या

(ग) इस पर कोई मत अंकित न किया गया हो ; या

(घ) इस पर मत को सूचित करने वाला चिन्ह इस रीति से लगाया गया हो जिससे शंका उत्पन्न हो जाए कि यह मत किस अभ्यर्थी को दिया गया है ; या

(ङ) यह, अप्रमाणिक मतपत्र है ; या

(च) यह इस प्रकार से क्षतिग्रस्त या विखंडित है कि इसकी असली मतपत्र के रूप में पहचान स्थापित न की जा सकती हो ।

(4) पीठासीन अधिकारी, किसी भी मतपत्र को अस्वीकार करने से पूर्व, प्रत्येक उपस्थित अभ्यर्थी को, मतपत्र का निरीक्षण करने का व्यक्ति-युक्त अवसर प्रदान करेगा किन्तु इसे किसी अन्य मतपत्र को छूकर देखने की अनुमति नहीं देगा ।

(5) पीठासीन अधिकारी, नामजूर किए गए प्रत्येक मतपत्र पर "आर" अक्षर तथा नामजूर किए जान के आधार संक्षिप्त रूप में अपने पूरे हस्ताक्षर सहित स्वयं अभिलिखित करेगा ।

(6) इस नियम के अधीन नामजूर किए गए समस्त मतपत्र एक पृथक ढेरी में रखे जाएंगे ।

(7) सभी निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों की बाबत मतों की गणना पूर्ण हो जाने के उपरान्त, पीठासीन अधिकारी परिणाम तैयार करेगा और अध्यक्ष के पद के लिए प्ररूप-3 में उस अभ्यर्थी को निर्वाचित घोषित कर देगा जिसके पक्ष में सबसे अधिक मत पड़े हों और सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित प्रति, उचित रसीद लेने पर, निर्वाचित अभ्यर्थी को देगा परन्तु यदि अभ्यर्थियों के बीच बराबर-बराबर मत पाए जाते हैं, तो पीठासीन अधिकारी निर्वाचन का विनिश्चय उनकी उपस्थिति में भाग्य पत्रक द्वारा करेगा और जिन अभ्यर्थियों के पक्ष में भाग्य पत्रक पड़ता है उसके सम्बन्ध में यह समझा जाएगा कि उन्होंने एक अतिरिक्त मतपत्र प्राप्त किया है और वे निर्वाचित घोषित किए जाएंगे ।

(8) इस नियम के उप-नियम (1) से (7) के उपबन्ध, उपाध्यक्ष के निर्वाचन में मतों की गणना की बाबत अत्यवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे ।

7. घोषणा के उपरान्त अभिलेख का मोहर-बन्द किया जाना.—परिणाम घोषित किए जाने के उपरान्त पीठासीन अधिकारी अस्वीकृत मतपत्रों के बण्डल सहित विधिमान्य मतपत्रों को अभ्यर्थीवार पृथक-पृथक पैकटों में रखेगा जिन पर ऐसे दस्तावेजों की पूरी विशिष्टियाँ लिपिवद्ध की जाएगी और ये पैकट उसकी मोहर के साथ मोहरबन्द किए जाएंगे ।

निर्वाचन सम्बन्धी सभी अन्य कागजात भी पृथक् पैकटों में रखे जाएंगे और उन पर दस्तावेजों की विशिष्टता लिपिवद्ध की जाएगी।

8. बैठक की कार्यवाहियाँ और निर्वाचन कागजात की सुपुर्दगी.—(1) पीठासीन अधिकारी, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के निर्वाचन के पूर्ण हो जाने के उपरान्त, कार्यवाहियों की, कार्यवाही पुस्तिका में अभिलिखित करेगा और उन पर अपने हस्ताक्षर करेगा।

(2) पीठासीन अधिकारी, पंचायत समिति के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष सम्बन्धी अभिलेख, सम्यक् रूप में उसके द्वारा हस्ताक्षरित प्रति सहित उपायुक्त को या इस निमित्त लिखित रूप में प्राधिकृत किसी अन्य प्राधिकारी को परिदत्त करेगा।

9. अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन की अधिसूचना.—उपायुक्त, बैठक की कार्यवाहियों और परिणाम की घोषणा की प्राप्ति के उपरान्त, अधिनियम की धारा 8 के अधीन यथा अपेक्षित पंचायत समिति के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के नाम शीर्षक संख्या के अधिस्त में अधिसूचित करेगा।

10. अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के निर्वाचन के लिए द्वितीय बैठक करना.—उपायुक्त, नियम 3 के अधीन संचालित और धारा 68 की उप-धारा (1) के अधीन अधिसूचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन की तारीख से अठ्ठाई वर्ष की अवधि के अन्तर्गत से एक मास की अवधि के भीतर अधिनियम की धारा 75 की उप-धारा (3) के अधीन यथा उपबन्धित पंचायत समिति के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन के लिए द्वितीय बैठक बुलाने के लिए तारीख, समय तथा स्थान निर्दिष्ट करेगा और ऐसा निर्वाचन, इन नियमों में यथा अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार संचालित किया जाएगा।

11. आकस्मिक रिक्ति.—जब अध्यक्ष या उपाध्यक्ष की मृत्यु, पद त्याग या पद से हटाए जाने के कारण यथा स्थिति रिक्ति हो जाती है या वह पंचायत समिति का सदस्य नहीं रहता है या उसके स्थान पर नए अध्यक्ष या उपाध्यक्ष का निर्वाचन किया जाना हो तब ऐसा निर्वाचन, इन नियमों के नियम 3 से 9 में विहित रीति में संचालित किया जाएगा।

12. अधीक्षण, नियन्त्रण तथा निदेश.—(1) पंचायत समिति के निर्वाचन, निदेशक निर्वाचन (स्थानीय निकाय) के अधीक्षण एवं नियन्त्रण के अधीन संचालित किए जाएंगे और इस निमित्त ऐसे निदेश जारी कर सकेगा जो वह आवश्यक समझे।

(2) यदि इन नियमों के निर्वाचन सम्बन्धी कोई आशंका या विवाद उत्पन्न हो जाए तो उसे निदेशक निर्वाचन, (स्थानीय निकाय) हिमाचल प्रदेश को निर्दिष्ट किया जाएगा और उसका विनिश्चय अन्तिम होगा।

भाग—3

निर्वाचन याचिकाएं

13. निर्वाचन याचिका का प्रस्तुतिकरण.—पंचायत समिति के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के विरुद्ध, अधिनियम की धारा 187 के अधीन निर्वाचन याचिका, निर्वाचन के निर्णय की घोषणा की तारीख से बीस दिनों के भीतर उपायुक्त के पास की जा सकेगी।

(2) उप-नियम (1) के अधीन याचिका के साथ, प्रत्यार्थियों की संख्या के समान, याचिका और उसके अनुलगनों की प्रतियाँ लगाई जाएंगी।

14. निर्वाचन याचिका की विषय वस्तु.—(1) निर्वाचन याचिकाएँ:—

(क) उन तात्त्विक कथनों का संक्षिप्त कथन, जिन पर याची निर्भर करता हो, होगा और यह

(ख) अभिवचन के सत्यापन के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 में अधिकथित रीति में हस्ताक्षरित तथा सत्यापित होगी।

(2) याचिका की कोई अनुसूची या उपबन्ध भी याचिका वाली रीति में ही याची द्वारा हस्ताक्षरित और सत्यापित किया जायेगा।

15. याचिका के साथ प्रतिभूति निक्षेप की जाना.—याची, निर्वाचन-याचिका प्रस्तुत करने के समय या उसके पूर्व, विहित प्राधिकारी के नाम, जिसको याचिका प्रस्तुत की गई हो, उपायुक्त लेखा शीर्ष के अधीन सूचारी, कोष या उप-कोष में प्रतिभूति-राशि के रूप में 200/- रुपये जमा करायेगा।

16. निर्वाचन याचिका का प्रत्याहरण.—(1) उप-नियम (2) के अधीन रहते हुए, निर्वाचन याचिका केवल विहित प्राधिकारी की अनुमति से, इस निमित्त उसे आवेदन करके वापस ली जा सकेगी:

परन्तु निर्वाचन याचिका के किसी भी आवेदन को, सम्बन्धित पंचायत समिति के पक्ष में प्रतिभूति निक्षेप के समपूत किए बिना, वापस लेने की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी।

(2) वापस लेने के लिए, उप-नियम (1) के अधीन दिए गए आवेदन की दशा में, याचिका से सम्बन्धित पक्षकारों को, आवेदन की सुनवाई के लिए नियत तारीख की सूचना दी जायेगी और ऐसी सूचना की प्रति उपायुक्त तथा सम्बन्धित पंचायत समिति के कार्यालय के सूचना पट पर चिपकाई जाएगी।

17. निर्वाचन याचिका की खारिजी.—यदि याचिका के प्रस्तुतिकरण के समय, अधिनियम की धारा 187 या नियम 13 या नियम 14 के उपबन्धों का अनुपालन नहीं किया जाता है, तो विहित प्राधिकारी, याचिका को खारिज कर देगा :

परन्तु याचिका, याची को सुनवाई का अवसर प्रदान किए बिना खारिज नहीं की जाएगी।

18. जांच का स्थान और प्रक्रिया.—(1) निर्वाचन याचिका की जांच विहित प्राधिकारी द्वारा नियत किए जाने वाले स्थान पर की जाएगी, और ऐसी जांच के समय और स्थान की सूचना, सुनवाई के प्रथम दिन के लिए नियत तारीख से पूर्व ऐसी अवधि की जो सात दिन से कम न हो, पक्षकारों को दी जाएगी।

(2) प्रत्येक निर्वाचन याचिका का विचारण, विहित प्राधिकारी द्वारा यथा शक्य शीघ्र, वादों के विचारण के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार किया जायेगा।

19. निर्वाचन अपास्त करने के आधार.—यदि विहित प्राधिकारी की राय है :—

(क) कि निर्वाचन की तारीख को, निर्वाचित व्यक्ति अधिनियम के अधीन निर्वाचित किए जाने के लिए अर्हित नहीं था या निरर्हित था; या

(ख) जहां निर्वाचित व्यक्ति का सम्बन्ध है उसके निर्वाचन का परिणाम निम्नलिखित से प्रभावित था :—

(i) किसी मत के अनुचित ग्रहण, नामजुरी या अस्वीकृति, या किसी शून्य मत के ग्रहण ;

(ii) अधिनियम या उसके तदधीन बनाए गए नियमों के उपबन्धों के अनुपालन—

तो वह, निर्वाचित व्यक्ति को निर्वाचन का अपास्त कर देगा।

20. निर्वाचन याचिका का उपशमन.—यदि, निर्वाचन-याचिका की समाप्ति से पूर्व याची या प्रत्यार्थी की मृत्यु हो जाती है तो निर्वाचन याचिका का उपशमन हो जाएगा। विहित प्राधिकारी, इस घटना की सूचना का प्रकाशन, पंचायत समिति और उपायुक्त कार्यालय के सूचना पट पर चिपका कर करवाएगा।

21. निर्वाचन के शून्य घोषित किए जाने पर, नए निर्वाचन का संचालन.—इन नियमों के अधीन जांच के परिणाम के फलस्वरूप, अर्थार्थी के निर्वाचन का शून्य घोषित किए जाने की दशा में राज्य सरकार निदेश करेगी कि इन नियमों के उपबन्धों के अनुसार नए निर्वाचन का संचालन किया जाए।

22. निरसन और व्यावृत्ति.—हिमाचल प्रदेश पंचायत समिति (इलैक्शन) रूल्ज, 1973 एतद्द्वारा निरसित किए जाते हैं :

परन्तु ऐसे निरसित नियमों के अधीन किया गया कोई निदेश या आदेश या की गई कार्रवाई, जब तक कि इन नियमों के उपबन्धों से अमंगत न हो, इन नियमों के तत्स्थानी उपबन्धों के अधीन क्रमशः किया गया समझा जाएगा या की गई समझी जाएगी।

प्ररूप-1

[नियम 5 (viii) देखें]

पद के निर्विरोध होने पर परिणाम की घोषणा

पंचायत समिति के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष के पद के लिए निर्वाचन।

हिमाचल प्रदेश पंचायत समिति अध्यक्ष और उपाध्यक्ष (निर्वाचित) नियम, 1988 के नियम 5 के खण्ड (vii) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अनुसरण में :—

मैं घोषित करता हूँ कि (नाम) (पता)

पंचायत समिति के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष के रूप में समयक रूप से निर्वाचित किए गए हैं।

स्थान

तारीख

बैठक की अध्यक्षता करने वाले
अधिकारी के हस्ताक्षर।

प्ररूप-2

[नियम 5 (1) देखिये]

मतपत्र

पंचायत समिति

पद के लिए निर्वाचन

क्रम संख्या	अभ्यर्थी का नाम	मतदाता द्वारा, चिन्ह (X) के लिए
1.		
2.		
3.		
4.		
5. इत्यादि		

प्ररूप-3
[नियम 6 (7) देखें]

पंचायत समिति के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष पद के निर्वाचन के परिणाम की घोषणा और उसकी विवरणी ।

क्रमांक 1	अभ्यर्थी का नाम 2	डाले गए विधिमाम्य मतों की संख्या 3
--------------	----------------------	---------------------------------------

डाले गए विधिमाम्य मतों की कुल संख्या :
अस्वीकृत मतों की कुल संख्या :

मैं घोषणा करता हूँ कि (नाम) के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष का पद भरने के लिए सम्यक् रूप से निर्वाचित किए गए हैं ।

स्थान
तारीख

हस्ताक्षर
पीठासीन अधिकारी ।

प्ररूप-4
[नियम 14 (1) देखें]

शपथ पत्र
मैं, संलग्न निर्वाचन याचिका में, पंचायत समिति जिला के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष के रूप में निर्वाचित श्री के निर्वाचन के प्रश्नगत करने वाला याची, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान और घोषणा करता हूँ कि संलग्न निर्वाचन याचिका के परा और उससे संलग्न अनुसूची के परा में किए गए कथन मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सही हैं ।

अभिसाक्षी के हस्ताक्षर ।

मेरे समक्ष 198 के दिन व इस स्थान पर श्री/श्रीमती द्वारा सत्यानि से प्रतिज्ञान किया गया / शपथ ग्रहण की गई ।

स्थान
तारीख

मैजिस्ट्रेट/शपथ-प्राप्त/नोटरी पब्लिक

आदेश द्वारा,
हस्ताक्षरित-
सचिव (निर्वाचन)

[Authoritative English text of notification No. 7-2/74-Elec. II, dated 5-5-1988, is hereby published in the Rajpatra, Himachal Pradesh as required under clause (3) of Article 348 of the Constitution of India].

ELECTION DEPARTMENT

NOTIFICATION

Shimla-171002, the 5th May, 1988

No. 7-2/74-Elec. -II.— In exercise of the powers conferred by section 163 read with section 187 of the Himachal Pradesh Panchayati Raj Act, 1968 (Act No. 19 of 1970), the Governor, Himachal Pradesh is pleased to make the following rules entitled as the Himachal Pradesh Panchayat Samitis Chairman and Vice-Chairman (Election) Rules, 1988, the same having been published in the Rajpatra, Himachal Pradesh vide this Department notification No. 7-2/74-Elec. -II, dated 19th September, 1987, namely:—

PART—I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—These rules may be called the Himachal Pradesh Panchayat Samitis Chairman and Vice-Chairman (Elections) Rules, 1988.

(2) These rules shall come into force at once.

2. Definitions.— (1) In these rules, unless there is anything repugnant to the subject or context,—

- (a) “Act” means the Himachal Pradesh Panchayati Raj Act, 1968;
- (b) “costs” means all costs, charges and expenses of, or incidental to a trial of an election petition;
- (c) “candidate” means a person who has been or claims to have been duly nominated as a candidate at an election;
- (d) “Director of Elections (Local Bodies)” means a person who is appointed by the State Government to perform the functions of Director of Elections (Local Bodies) to carry out the purposes of these rules;
- (e) “election” means an election to fill up the office of the Chairman or the Vice-Chairman of a Panchayat Samiti;
- (f) “electoral-right” means the right of a person to contest or not to contest as, or to withdraw from being a candidate or to vote or refrain from voting at an election;
- (g) “form” means the form appended to these rules;
- (h) “pleader” means any person entitled to appear and plead for another in a civil court and includes an Advocate;
- (i) “presiding officer” means any officer authorised by the Deputy Commissioner to preside over the meeting to carry out the purposes of these rules; and
- (j) “prescribed authority” means the Deputy Commissioner of the District and shall include any other Officer as may be appointed by notification in the Official Gazette, by the Government to carry out the purposes of these rules.

(2) All other words and expressions used herein but not defined in these rules, shall have the same meaning as assigned to them in the Act.

PART—II

CONDUCT OF ELECTION OF THE CHAIRMAN AND THE VICE-CHAIRMAN

3. Notice for election.—After the co-option of the members under clause (b) of section 63 of the Act, the Deputy Commissioner shall fix date, time and place for holding a meeting to be presided by himself or any other officer authorised by him for the election of the Chairman and the Vice-Chairman of a Panchayat Samiti by giving a notice of not less than 72 hours to all its primary and co-opted members by its delivery at their ordinary place of residence, after their names are notified in the official Gazette, in accordance with the provisions of section 68 of the Act. The oath of allegiance shall also be administered to such members present in the meeting who have not taken such oath in earlier meeting fixed for the purpose, before proceeding with the election of the Chairman and the Vice-Chairman.

4. Quorum for meeting.—For holding an election of a Chairman and Vice-Chairman in a meeting fixed in this behalf under rule 3, two-thirds of the total number of primary and co-opted members of a Panchayat Samiti shall constitute the quorum:

Provided that if such a meeting is adjourned for want of requisite quorum, the second meeting will be held after giving due notice of 72 hours to all the primary and co-opted members and in such a meeting no quorum shall be required and the election of the Chairman/the Vice-Chairman shall be held.

5. Procedure for election of the Chairman and Vice-Chairman.—The Chairman/Vice-Chairman shall be elected by the primary and co-opted members of a Panchayat Samiti from amongst themselves by a secret ballot in the manner prescribed hereunder :

- (i) the Presiding officer shall, after calling the proposals and recording the names of proposers and seconders in the record of proceedings of the meeting, prepare a list of contesting candidates in alphabetical order in Hindi in Devnagri script. A copy of the list showing the names of contesting candidates shall be displayed at a conspicuous place where election is to be conducted for the information of the members. The poll shall commence and close at such hours as may be fixed and announced by the Presiding Officer. The ballot paper shall be in Form II and steel ballot box shall be used at such an election;
- (ii) before issuing the ballot paper to a voter, the presiding officer shall put his signatures in full, on the back of ballot paper and proper account thereof shall be kept;
- (iii) the voter on receipt of the ballot paper shall enter the voting compartment and mark a cross mark (×) against the name of the candidate to whom he intends to vote;
- (iv) the voter after marking the ballot paper in the manner specified in clause (iii) above shall fold the ballot paper so as to conceal his vote and he shall insert the ballot paper into the ballot box;
- (v) the voter who has used the ballot paper in such a manner that it can not be treated as a valid ballot paper, he may return the same to the presiding officer with a request to issue another ballot paper and the presiding officer being satisfied shall issue another ballot paper to the voter and mark the returned ballot paper as "Spoiled and Cancelled";
- (vi) if a voter after obtaining a ballot paper, decides not to use it, he shall return it to the presiding officer and the ballot paper so returned shall be marked as "Returned-Cancelled" by the presiding officer; and
- (vii) all cancelled ballot papers shall be kept in a separate packet by the presiding officer:

Provided that if only one candidate (one for the office of the Chairman and one for the office of the Vice-Chairman) for the office is proposed, the presiding officer shall declare such a candidate elected in Form-I and supply a copy of declaration to the elected candidate against proper receipt.

6. Counting of votes at the election of the Chairman and Vice-Chairman.—(1) After the voting of the Chairman and the Vice-Chairman is complete, the presiding officer shall allow the candidates present at the time of counting to inspect the ballot box and the seal to satisfy themselves that the same are intact and shall undertake the counting of votes polled for the Chairman.

(2) The presiding officer shall open the ballot box and take out the ballot papers from the ballot box and sort them out candidate-wise.

(3) The presiding officer shall reject a ballot paper:—

(a) if vote is given in favour of more than one candidate; or

(b) if it bears any mark or writing by which the elector can be identified; or

(c) if no vote is recorded thereon; or

(d) if the mark indicating the vote thereon is placed in such a manner as to make it doubtful to which candidate the vote has been given; or

(e) if it is spurious ballot paper: or

(f) if it is so damaged or mutilated that its identity as genuine ballot paper cannot be established.

(4) The presiding officer before rejecting any ballot paper shall allow each candidate present, a reasonable opportunity to inspect the ballot paper but shall not allow him to handle it or any other ballot papers.

(5) The presiding officer shall himself record on every ballot paper which he rejects the letter 'R' and the grounds of rejection in brief, with his signatures in full.

(6) All ballot papers rejected under this rule shall be kept in one separate bundle.

(7) After completion of counting of votes in respect of all the contesting candidates, the presiding officer shall compile the result and declare the candidate elected in Form III for the office of the Chairman, in whose favour the largest number of votes have been cast, and supply a copy duly signed to the elected candidate against proper receipt:

Provided that if equality of vote is found between the candidates, the presiding officer shall decide the elections by a lot in their presence and the candidate to whom the lot falls shall be considered to have received an additional vote and as such shall be declared elected.

(8) The provisions of S-rules (1) to (7) of this rule shall apply *mutatis-mutandis* in relation to the counting of votes at the election of the Vice-Chairman.

7. Sealing of records after declaration.—After the result is declared, presiding officer shall keep candidate-wise valid ballot papers in bundles together with the bundle of rejected ballot papers in a separate packet outside of which the full particulars of such a document shall be recorded and the packets shall be sealed with his seal. All other papers relating to the election shall also be kept in separate packets and particulars of documents shall be recorded thereupon.

8. Proceedings of the meeting and delivery of election papers.—(1) After completion of election of the Chairman and Vice-Chairman, the presiding officer shall record the proceedings in proceeding-book and shall sign the same.

(2) The presiding officer shall deliver the record relating to the election of the Chairman and the Vice-Chairman of a Panchayat Samiti along with a copy of proceedings duly signed by him, to the Deputy Commissioner or any other officer, authorised by him in writing in this behalf.

9. Notification of election of the Chairman and the Vice-Chairman.—The Deputy Commissioner after receipt of the proceedings of the meeting and declaration of the result shall notify in the official Gazette the names of the Chairman and Vice-Chairman of the Panchayat Samiti as required under section 68 of the Act.

10. Holding of second meeting for the election of Chairman and Vice-Chairman.—Within a period of one month from the expiry of a period of two and a half years from the date on which the election of the Chairman and Vice-Chairman, conducted under rule 3, is notified under sub-section (1) of section 68, the Deputy Commissioner shall fix date, time and place for holding second meeting for the election of Chairman and Vice-Chairman of a Panchayat Samiti as provided under sub-section (3) of section 75 of the Act. and such election shall be conducted in accordance with the procedure laid down in these rules.

11. Casual vacancy.—When a vacancy occurs by death, resignation or removal of the Chairman or Vice-Chairman as the case may be or if he ceases to be a member of the Panchayat Samiti, and a new Chairman or Vice-Chairman is to be elected in his place, such election shall be conducted in the manner prescribed in rules 3 to 9 of these rules.

12. Superintendence, control and direction.—(1) The elections of Panchayat Samiti shall be conducted under the Superintendence and Control of the Director of Elections (Local Bodies) and he may issue such directions as he may deem necessary in this behalf.

(2) In case there is any doubt or dispute regarding interpretation of these rules, the same shall be referred to the Director of Elections (Local Bodies), Himachal Pradesh, and his decision shall be final.

PART—I

ELECTION PETITIONS

13. Presentation of election petition.—(1) An election petition under section 187 of the Act, against the election of a Chairman or a Vice-Chairman of a Panchayat Samiti, may be presented to the Deputy Commissioner within twenty days from the date of announcement of the result of the election.

(2) The petition under sub-rule (1) shall be accompanied by copies of the petition and of its enclosures equal to the number of respondents.

14. Contents of election petition.—(1) An election petition shall, —

(a) contain concise statement of the material facts on which the petitioner relies; and

(b) be signed by the petitioner and verified in the manner laid down in the Code of Civil Procedure, 1908 for the verification of pleadings.

(2) Any schedule or annexure to the petition shall also be signed by the petitioner and verified in the same manner as the petition.

15. Security deposit to be made with the petition.—At the time of or before presenting an election petition, the petitioner shall deposit a sum of Rs. 20/- as security money in the Government treasury or sub-treasury under the appropriate head of account in the name of prescribed authority to whom the petition is presented.

16. Withdrawal of election petition.—(1) Subject to sub-rule (2), an election petition may be withdrawn only with the leave of the prescribed authority by making an application to him in this behalf:

Provided that no application for withdrawal of an election petition shall be permitted without forfeiting the security deposit in favour of the Panchayat Samiti concerned.

(2) When an application for withdrawal under sub-rule (1) is made, a notice of fixing a date for hearing of the application, shall be given to the parties concerned to the petitioner and a copy of such notice shall be pasted at the notice board of the offices of the Deputy Commissioner and of the Panchayat Samiti concerned.

17. Dismissal of election petition.—If at the time of presentation of the petition, the provisions of section 187 of the Act, or rules 13 or 14, or rule 15 are not complied with the prescribed authority shall dismiss the petition:

Provided that the petition shall not be dismissed without affording the petitioner an opportunity of being heard.

18. Place and procedure of enquiry.—(1) The enquiry of the election petition shall be held at a place to be fixed by the prescribed authority and notice of the time and place of such enquiry shall be given to the parties, not less than seven days before the date fixed for the first day of hearing.

(2) Every election petition shall be tried by the prescribed authority as expeditiously as possible in accordance with the procedure laid down under the Code of Civil Procedure, 1908 for trial of suits.

19. Grounds for setting aside elections.—If the prescribed authority is of the opinion:—

(a) that on the date of his election the elected person was not qualified, or was disqualified to be elected under the Act; or

(b) that the result of the election, in so far as it concerns the elected person, has been materially affected:—

(i) by the improper reception, refusal or rejection of any vote or the reception of any vote which is void;

(ii) by any non-compliance with the provisions of the Act or any rules made thereunder; he shall set aside the election of the elected person.

20. Abatement of election petition.—If, before the conclusion of the enquiry of an election petition, if the petitioner or respondent dies, the election petition shall abate, the prescribed authority shall cause notice of such event to be published by being pasted on the notice board of the office of the Deputy Commissioner and the office of the Panchayat Samiti.

21. Fresh election to be held, if an election is declared void.—When as a result of an enquiry under rules, the election of a candidate is declared void, the state Government shall direct that a fresh election shall be conducted in accordance with the provisions of these rules.

22. Repeal and saving.—The Himachal Pradesh Panchayat Samiti (Election) Rules, 1973 are hereby repealed:

Provided that any direction given or order made or action taken under the rules so repealed shall, so far as it is not inconsistent with the provisions of these rules, be deemed to have been given, made and taken under the corresponding provisions of these rules.

FORM I

[See rule 5 (VII)]

DECLARATION OF RESULT WHEN SEAT IS UN-CONTESTED

Election for the office of the Chairman/Vice-Chairman of Panchayat Samiti.....

In pursuance of the provisions contained in clause (vii) of rule 5 of the Himachal Pradesh Panchayat Samiti Chairman and Vice-Chairman (Elections) Rules,.....1988.

I declare that (Name).....
 (Address)..... has been duly
 elected as Chairman/Vice-Chairman of.....
 Panchayat Samiti.

Place.....

Date.....

Signature
 Officer, Presiding the meeting.

FORM-II

[See rule 5(i)]

Panchayat Samiti.....
 Election for the office of.....

Sr.No.	Name of candidate	For mark (x) by voter
1.		
2.		
3.		
4.		
5. etc.		

FORM III

[See rule 6(7)]

DECLARATION OF RESULT AND RETURN OF ELECTION FOR THE OFFICE OF CHAIRMAN/VICE-CHAIRMAN OF.....PANCHAYAT SAMITI

ame of candidate	Number of valid votes polled	
1	2	3

Total number of valid votes polled.....
 Total number of rejected votes.....

I declare that.....(Name) of.....
.....(Address) has been duly elected to fill up the seat of Chairman/Vice-Chairman.....
.....Panchayat Samiti.

Place.....

(Signature).....
Presiding Officer.

Date.....

FORM IV

[See rule 14(1)]

AFFIDAVIT

I.....(give here the full name and address) the petitioner in the
accompanying election petition calling in question the election of Shri.....
as Chairman/Vice-Chairman of.....Panchayat Samiti.....
.....district, do hereby solemnly affirm and declare that the statements made in
paragraphs.....of the
accompanying election petition and in paragraphs.....of the schedule
annexed there to are true to the best of my knowledge and belief.

Signature of deponent.

Solemnly affirmed/sworn by Shri/Shrimati.....at this.....
.....day of.....198

Place.....

Before me

Date

Magistrate/Oath Commissioner/Notary Public

By order,

Sd/-
Secretary,

